गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराञ्चल) २४९४११

आत्मीय परिजनों,

आशा एवं विश्वास है कि आराध्य सत्ता परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी एवं युगशक्ति माँ गायत्री की असीम अनुकम्पा से घर-परिवार में आप सभी सानंद होंगे। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज के समाचारों से आप सभी प्रायः अवगत होते रहते हैं, साथ ही सूक्ष्म गुरुसत्ता के स्नेह-संरक्षण की दिव्य अनुभूतियों को भी अनुभव करते होंगे। गुरुवर ने इस युग के महाभियान (महान् युग निर्माण आन्दोलन) में हम सबकी किसी न किसी रूप में निरन्तर सहभागिता को जीवन लक्ष्य का एक परम साधन बताया है। साथ ही उनकी दिव्य शक्तियों को धारण कर सकने हेतु पात्रता विकास के लिए समय-समय पर मार्गदर्शन दिया है। इसी क्रम में उन्होंने नवरात्रि में विशेष साधना करने का निर्देश दिया है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी चैत्र नवरात्रि की एक शुभ पावन घड़ी हमारे समक्ष २१ से २९ मार्च की तिथियों में आई है। इन दिनों संकल्पित साधना की जाती है। इसके अंतर्गत उपासना के क्रम में प्रतिदिन २७ माला गायत्री महामंत्र के जप का विधान है, जो अपनी गति के अनुसार तीन से चार घंटे में पूरा हो जाता है। यदि कोई नवागंतुक पूरा गायत्री मंत्र बोलने में अक्षम हो, तो वह पंचाक्षरी गायत्री मंत्र 'ॐ भूर्भुवः स्वः' के साथ भी इस जप संख्या को पूरी कर सकता है। इसमें प्रतिदिन एक घंटा समय लगता है। पूर्ण श्रद्धा के साथ संपन्न यह साधना आत्मोत्कर्ष की दृष्टि से चमत्कारिक रूप से फलित होती है।

आशा है आप भी व्यक्तिगत-सामूहिक अथवा अपने शहर की शाखा में विधिपूर्वक नवरात्रि अनुष्ठान सम्पन्न कर रहे होंगे। दोष-परिमार्जन की व्यवस्था गायत्री तीर्थ शांतिकुंज (परम पूज्य गुरुदेव कक्ष) से की जा रही है, जो कि करोड़ों साधकों का गुरुद्वारा है एवं जहाँ सतत प्रतिदिन चौबीस लक्ष का जप वर्षभर नियमित चलता है। पूर्णाहुति के दिन सभी साधकों को हवन में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। प्रत्येक आहुति के साथ भाव करें कि देव परिवार के सदस्यों के सामूहिक साधनात्मक पुरुषार्थ से चहुँओर संव्याप्त विषम प्रवाह छँट रहा है और उज्ज्वल भविष्य की सुखद-संभावनाएँ साकार हो रही हैं। नवरात्रि साधना में सहभागी परिजनों की सूची नाम-पते सहित शान्तिकुंज अवश्य भेजें, ताकि यहाँ से उनके लिए भी दोष परिमार्जन की विधिपूर्वक व्यवस्था की जा सके।

साधना का कलेवर तो सभी अपनाते हैं, परन्तु उसकी मूल धुरी प्राणचेतना तप एवं योग को अधिकांश भूल जाते हैं। हमारे पास तो परम पूज्य गुरुदेव का किया हुआ प्रचंड तप (चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरण), परम वंदनीया माताजी द्वारा देव कन्याओं सहित संपन्न इतना ही संकल्पित अनुष्ठान तथा प्रतिदिन शान्तिकुंज-गायत्री तीर्थ एवं गायत्री तपोभूमि, मथुरा में संपन्न हो रहा करोड़ों गायत्री जपरूपी भंडागार है। अतः साधनाकाल में तप एवं योग को समुचित स्थान देना चाहिए। तप का अर्थ है-अपनी जीवन ऊर्जा को बर्बाद होने से रोकना और योग का मतलब है, जीवन के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के लिए व्रतशील होना एवं अपनी प्राण चेतना को समष्टिगत चेतना में एकाकार करना। गायत्री युग-परिवर्तनकारी महाशक्ति है। हमारी साधना भी जब समष्टिगत साधना में जुड़ जाती है, तो हम भी उस कोश की जमाराशि के एक शेयरधारी बन जाते हैं। बिना किसी मनोकामना से की गई निष्काम उपासना, बिना कोई द्वेष या प्रतिद्वंद्विता के भाव से परहितार्थ की गई गायत्री-साधना अनुपम फल देती है। किसी भी साधक को इस महत्त्वपूर्ण अवसर को गँवाना नहीं चाहिए।

सभी साधक भाई-बहिनों के लिए प्रस्तुत नवरात्रि साधना भौतिक-आत्मिक शक्ति-सम्बल के रूप में फलवती सिद्ध हो एवं गुरुसत्ता का अजस्र अनुदान-वरदान साधना माध्यमों से निरन्तर मिलता रहे और आत्मिक उन्नति का मार्ग भी निरंतर प्रशस्त हो, यही आराध्यसत्ता से कामना-प्रार्थना है।

आपका भाई

(डॉ० प्रणव पण्ड्या)

आपकी बहिन

(शैलबाला पण्ड्या)